डॉ. इयाह्ईया आलहुदा

विज्ञान और प्रौद्योगिकी
विश्वविद्यालय, मेघालय

खुले आसमान

पहाड़ों की तलहटी में एक छोटे से गाँव में रामू रहता था। वह एक दयालु और सरल युवक था, जिसका दिल प्रकृति के लिए प्यार से भरपूर था।

एक दिन, रामू जंगल में लकड़ी काट रहा था जब उसने एक छोटे से पक्षी को जाल में फंसा हुआ पाया। पक्षी बुरी तरह घायल हो गया था और मदद के लिए फड़फड़ा रहा था। रामू का दिल टूट गया और उसने तुरंत पक्षी को जाल से मुक्त किया।

पक्षी को चोटें आई थीं, इसलिए रामू उसे अपने घर ले आया और उसकी देखभाल करने लगा। उसने पक्षी को भोजन और पानी दिया और उसकी चोटों पर दवा लगाई। कुछ दिनों बाद, पक्षी ठीक हो गया और उड़ने के लिए तैयार हो गया।

रामू ने पक्षी को खुले आसमान में उड़ाते हुए खुशी का अनुभव किया। उसने महसूस किया कि प्रकृति के एक छोटे से हिस्से की भी मदद करना कितना संतुष्टिदायक हो सकता है।

उस दिन के बाद से, रामू का प्रकृति प्रेम और भी गहरा हो गया। वह अक्सर जंगल में जाता और पेड़ों, जानवरों और पक्षियों का अवलोकन करता। वह उनके रहने के तरीके और उन्हें क्या खुशी देता है, उसे समझने की कोशिश करता था।

एक दिन, वह जंगल में शिकार कर रहा था जब उसने एक घायल हिरण को एक पेड़ के नीचे छिपते हुए देखा। हिरण का एक पैर बुरी तरह जख्मी हो गया था, और वह दर्द से कराह रहा था। रामू का दिल जानवर की पीड़ा से पिघल गया, और उसने उसकी मदद करने का फैसला किया। वह जानता था कि घायल हिरण उसकी मदद के बिना जीवित नहीं रह सकता।

रामू ने सावधानी से हिरण के पास पहुंचा और उसे अपने हाथों में उठा लिया। वह उसका दर्द दूर करने के लिए नरम शब्दों में उससे बात करता रहा। धीरे-धीरे, हिरण शांत हो गया और रामू के स्पर्श को स्वीकार करने लगा।

रामू ने जड़ियों और पत्तियों से एक पट्टी बनाई और हिरण के घाव पर लपेट दी। फिर, वह उसे अपनी झोपड़ी ले गया और हिरण की देखभाल की। उन्होंने उसे खाना और पानी दिया, और उसके घाव को साफ रखा। धीरे-धीरे, हिरण स्वस्थ होने लगा और उसका पैर फिर से चलने लायक हो गया।

जब हिरण पूरी तरह से ठीक हो गया, तो रामू उसे जंगल में छोड़ने के लिए तैयार हो गया। उसने हिरण को अपने कंधे पर उठाया और उसे उस जगह पर ले गया जहां उसने उसे पाया था।

रामू की कहानी गाँव के अन्य लोगों के दिलों को भी छू गई। उन्होंने भी रामू का अनुसरण किया और प्रकृति के लिए अपने प्यार और सम्मान को विकसित किया। गाँव के लोग अब जंगल की कटाई कम करते थे और जानवरों का शिकार नहीं करते थे।